

पंडे इति मे ३

धम्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाविहार

II-373

याउवाउरुनी ॥ २ ॥ पश्यं प्रसूधो न प्रयत्नय न हि न हानि न विपुवा
प्रयत्नानां नो गता स कनन नदि गावा ये मका नया नैरमरु श्री हान न शीपे रु
गं गि गव रुत न नादि गो सर्व सा को सो को नी सो क न था य न म गु म क र्व गा न २
निःस्पृधि मधि ॥ ४ ॥ नी गा हो ये सु म के म क स म म हि गा वो रु ता वा म मा
नै या यो वा शु सु मा नो सु ग म सु र स ग हि मां या य वो धै र या व ह ना म यानि

विह क स म दि गा वा न वा नी पु न क म्बि दि ह्य सु धी नै म न म द य धि रो या उ वा
ध म वि ह ॥ ५ ॥ रु रु म को म धी य क द क थ स ट ट म गो ट ट म ला क बी रु
इ वा म धी य ला ने रु न वि क न रु ना सु र्व द म म म नै र व द्या नां व द्य ना थ उ नू नी
ग य न मि नी न रु गां का यै हि दी ॥ ६ ॥ ध म र्वी मा ल म गा या रु रु ध कि का ध
ग मि रु वि रु म नि यै ध म सं ध म द्ध त र स क न ह नै र सी क ना धं पु ला वा

यस्य संप्रदायः कामाक्ष्यविनिर्वाणायार्थवित्तमस्तथा
एतन्मन्त्रं हस्तनासुषमाङ्गाहर्द्वयः ॥ १ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
सिंहकोषः ७३ त्रिभुक्तुसमाय ॥ ७३ ॥

धम्मरत्न ब्रजध्वज सुरत श्री महाविहार

II-373